8) प्राणी इन्द्रियों की शक्ति कैसे प्राप्त करता है ?

गुणी बहुमान जिनआगम वाणी, काने धरी बहुमाने जी।
द्रव्य भाव बहिरातम टोली पर भव समजे साने॥ 38

9) मनुष्य कुकर्म क्यों नहीं छोडता है ?

करुपी शास्त्र न सांभले रे, तिणे नवि पामे धर्म।
धर्म विना पशु प्राणिया रे, छंडे नहीं कुकर्म॥ 216

10) अपनी गुण रूपी वाडी को कैसे काटते है ?

विणदीठी अणसांभली बात, लोक वच्चे चलवे पापी॥
चाडी करतां पाडी जालि, वाडी गुणतणी कापी॥ 188

11) सभी जीव (चरम शरीरी छोडकर) प्रत्येक समय में क्या करते है ?

चरम शरीरी विण जीके, जीव इणे संसार।
समय समय बाँधे सही, कर्म ते सात प्रकार॥ 131

12) आत्मा तिर्यंच आयु का बंध कैसे करती है ?

कुड कलंक चढावतां, नील कापोत लेश्या परिणाम के,
श्री शुभवीरना निंदको, तिरि आयु हो बांधे एणे ठाम के 145

13) अशुभ नाम कर्म उदय से क्या होता है ?

ऊँच नीच देहाकृति खंपण देहे होय।
कृष्ण नील जाडो घणुं, अशुभ नाम ते जोय 157

14) सज्जन पुरुषों को कौनसी बात समझाई जाती है ?

जानजीन चारनुं विष रहेने, सज्जनने एणिपेरे समझावे,
नरक लहे समकित गुणधान अंते समाधिपणुं नावि पावे 88

15) श्री धर्मदास गणि ने कौनसे वचन कहे है ?

गीतारथ विण उग्र विहारी, तपिया पण मुनि बहुला संसारी॥
अल्पागम तप क्लेश ते जाणो, धर्मदास गणि वचन प्रमाणो। 13

प्र.2. निम्नोक्त विलोम वाक्यों को सही करके लिखिए । 20

उदा. सुभग नामकर्म उदय से जीव सभी को प्रिय लगता है ।

उत्तर दुर्भग नामकर्म उदय से जीव सभी को अप्रिय लगता है 163

20

1) अज्ञान मिथ्यात्व की निशानी है । पृष्ट क्र.

मति और श्रुत ज्ञान की प्राप्ति यह सम्यक्त्व-प्राप्ति की निशानी है। 1म

2) संसार में सफलता पुण्याधीन है ।

धर्म में सफलता पुरूषार्थ के अधीन है । २३०

3) अनारंभी, निर्लोभी जीव मरकर नरक में उत्पन्न नहीं होते है ।

महारंभी, अतिलोभी जीव मरकर नरक में उत्पन्न 151-52

4) तिर्यंच भव से धर्म की अंशतः आराधना संभव है ।-होता है।

धर्म की पूर्ण आराधना मानव-देह से ही संभव है । २१९

5) मूर्खों के साथ रहने से मोह के बंधन घनिष्ट होते है ।

पंडितजनों के साथ रहने से मोह के बंधन भी टूट जाते हैं। 85

6) ऐसा जरुरी नहीं है कि जो लिखा होता है, वही होता है ।

कर्म में जो लिखा होता है, वही होता है । २५४

7) अपनी वस्तु से बनी रसोई से मन के परिणाम उज्ज्वल बनते है ।

"चोरी की वस्तु से बनी रसोई भी मन के परिणाम को बिगाड़ने में २५२

8) विषयों की विरक्ति अमृत समान होती है । समर्थ है ।"

विषयों की आसक्ति विष से भी भयंकर है। ११५

9) सज्जन की संगति बहुत फायदेमंद होती है ।

दुर्जन की संगति भयंकर नुकसान ही करती है। १९२

10) पाप हो जाने के बाद पाप का स्वीकार किया तो पाप मंद बन जाता है ।

पाप हो जाने के बाद यदि उस पाप को हृदय से स्वीकार नहीं करते हैं, तो वह पाप तीव्र बन जाता है । २०५

प्र.3.A • श्री वीरविजयजी ने अपनी रचनाओं में विविध आगम का आधार लिया है ।

20

कौन कौनसी पंक्तियाँ कौन कौन से आगम को निर्दिष्ट करती है ? [20]

• पूर्ण किताब के आधार पर लिखिए ।

उदा.	भाखे **भगवई** छट्ठ तप बाकी, = भगवती सूत्र	64 पृष्ठ क्र.
1.	नंदीसूत्र मोझार प्रभु = नंदी सूत्र	7
2.	ज्ञान प्रथम पछीजयणा, दशवैकालिक वाण - दशवैकालिक सूत्र	31
3.	भगवइ भाखे गणधरीया = भगवती सूत्र	50
4.	उत्तराध्ययने स्थिति लघु = उत्तराध्ययन सूत्र	59
5.	पन्नवणामां बार ते - प्रज्ञापना सूत्र	59
6.	नंदी सूत्रे एणी परे = नंदी सूत्र	41
7.	सूत्र विपाके सांभलो - विपाक सूत्र	67
8.	ठवणा अनुयोग द्वारा = अनुयोग द्वार सूत्र	276
9.	अंग कहे आचारा ज्ञि = आचारांग सूत्र	276
10.	पन्नवणाए कह्या, वेद विवश रह्या = प्रज्ञापना सूत्र	110
11.	विराधक षट्कायनो, आवश्यकमां तेह = आवश्यक सूत्र	84
12.	भगवईमां शुभवीर रे. = भगवती सूत्र	58

प्र.3.B मुनि श्री. वीरविजयजी की रचनाओं की सूची बनाइए ।

1 'ब्रियलवेली'	6. चौंसठ प्रकारी पूजा	कर्म के स्वरूप भेद-प्रभेद कर्म स्थिति कर्म फल दृष्टांत (पूजा रचना)
2 स्तवन	7 (45 आगमों के रहस्य समझानेवाली) 45 आगमपूजा	
3 सज्झाय	8 पंच कल्याणक पूजा	
4 रास-वेली	9 श्री शगेणांकित	
5 विवाहलो -ढालिया	10. सकल संघ सुखकारक	X / 286 Y

प्र.4. निम्नोक्त पूजाएँ करने का मुख्य उद्देश स्पष्ट कीजिए 30

1. ज्ञानावरणीय कर्म - **उदा.** (A) नैवेद्य पूजा – आहार का त्याग करने से आत्मा के अंतरंग तेज में वृद्धि होती है, आत्मा के ऐसे अणाहारी स्वरुप को पाने के लिए नैवेद्य पूजा करते है। 30 28

B. जल पूजा – पृष्ठ क्र.

शीतल तीर्थ जल के द्वारा संसार के ताप को दूर करने के लिए तथा जन्म,जरा ,मरण रुप रज की शांति के लिए एवं कर्म के दाह के लिए, अपने अज्ञान उच्छेद के लिए जल पूजा करते हैं 6

2. दर्शनावरणीय कर्म : A. चंदन पूजा –

जिनेश्वर भगवंत जीव आदि नौ तत्वों के उपदेशक है अत: प्रभु के नौ अंगों पर तिलक कर दर्शनावरणीय कर्म की उत्तर नौ प्रकृतियों को दूर करने के लिए चंदन पूजा की जाती है। 36

B. पुष्प पूजा –

अमूल्य सुगंधित पुष्पों से प्रभु के चरणों की पूजा करने से, उसके प्रभाव से सुगंध व दुर्गंध को जानने वाली नासिका आदि इन्द्रियों का आवरण अचक्षु दर्शनावरणीय कर्म दूर होता है 38

3. वेदनीय कर्म : A. जल पूजा –

जल पूजा करने से आत्मा निर्मल बनती है, आत्मा पर लगे हुए कर्ममैल दूर होते हैं। वेदनीय कर्म दूर होने से आत्मा का शुद्ध तेज प्रकाशित होता है 53-54

B. धूप पूजा –

प्रभु के सामने धूप पूजा करने से मिथ्यात्व की दुर्गंध दूर हो जाती है। शाता वेदनीय कर्म का बंध होता है और आत्मा का शुद्ध स्वरुप प्रकट होता है। 59

4. मोहनीय कर्म : A. दिपक पूजा –

संज्वलन क्रोध आदि चार कषायों की चांडाल चौकड़ी को दूर होने के बाद आत्म-गृह ज्ञान का दीपक प्रगट हो सके इसलिए दीपक पूजा करते हैं। 105

B. नैवेद्य पूजा –

रसप्रद आहार ग्रहण करने से वेद के उदय में वृद्धि होती है जिससे अनेक प्रकार के जंजाल खड़े होते हैं। उस वेद से मुक्ति पाने के लिए वेदरहित बनने के लिए नैवेद्य पूजा करते हैं। 109

5. आयुष्य कर्म : A. अक्षत पूजा –

आत्मा से पशुता को दूर कर आत्मा के शुद्ध स्वरूप को प्रगट करने और अक्षय पद प्राप्ति के लिए अक्षत पूजा की जाती है 148

B. फल पूजा –

कर्म बंधन की बेड़ी को तोड़ने के लिए (जिनेश्वर भगवंतों के गुणों का ध्यान कुल्हाड़े के समान है) फल पूजा से वह फल प्राप्त हो सके क्योंकि फल से फल का निर्धारण होता है 154
इसलिए फल पूजा की जाती है।

6. नाम कर्म : A. चंदन पूजा –

जिनमंदिर में दशत्रिक का पालन तथा दस प्रकार के यतिधर्म की आराधना कर, नामकर्म के स्थावर दशक का अंत लाने के लिए चंदन पूजा की जाती है। 162

B. दीपक पूजा –

आत्मा में ज्ञान रूपी ज्योति पैदा हो और नामकर्म की उत्तर प्रकृति का अंधकार दूर करने, नामकर्म की स्थितिबंध का नाश हो इसलिए दीपक पूजा करनी चाहिए 170

7. गोत्र कर्म : A. फल पूजा –

गौत्र कर्म का क्षय करने से आत्मा सिद्ध होती है उन सिद्ध भगवंतों की फल पूजा करने से उनके पास अविचल राज्य (मोक्ष पद) प्राप्त हो सकता है इसलिए फल पूजा करते हैं। 197

B. धूप पूजा –

धूप की गति ऊपर होती है अतः धूप पूजा करके नीच गोत्र का बंध नहीं होवे। गोत्र कर्म की दोनों उत्तर प्रकृतियाँ अघाती है। जिनका क्षय हो सके इसलिए धूप पूजा की जाती है। 188

8. अंतराय कर्म : A. अक्षत पूजा –

वीर्यान्तराय रूप बादल के कारण आत्मा रूपी सूर्य का तेज छिप गया है। ग्रीष्मकालीन तेज वाले ज्ञान रूपी ~~ज्ञान~~ सूर्य का उदय होता है आत्मा शुद्ध तेजवाली बनती है अतः अखंड अक्षत पूजा करनी चाहिये। 273

B. जल पूजा –

परमात्मा की जलपूजा अपनी ही आत्मा की विशुद्धि के लिए करनी है, परमात्मा तो स्वयं शुद्ध है। जल पूजा के माध्यम से पूजक ही अपना आत्म स्नान करता है 205

प्र.5. निम्नोक्त आत्माओं से क्या करने योग्य अथवा अयोग्य है ऐसी सीख मिलती है ? लिखिए। 20 20

उदा. सुकुमालिका साध्वी - अनेक बार विषयों का भोग करने पर भी आत्मा तृप्त नहीं बनती इसलिए उन विषयों का त्याग श्रेयस्कर है। 141

पृष्ठ क्र.

1. रावण

तीन खण्ड का अधिपति रावण इन्द्रियों की (स्त्रीदेह) आसक्ति के कारण सीता के चरणों में आलोटता था। चारित्रिक पतन की ओर ले जाने वाली आसक्ति का त्याग करना ही श्रेयस्कर है। 111

2. शुभमति रानी

मुनि के मलिन देह की कभी दुगुंछा नहीं करनी चाहिए इस दुगुंछा से जीव भवों-भवों तक अन्य से तिरस्कार का पात्र बनता है 225

3. आषाढाभूति मुनि

माया पिण्ड के कारण आषाढ़ाभूति का चारित्र से पतन हुआ और गुरु प्रदत्त प्रतिज्ञा से उद्धार हुआ अतः माया त्याग कर गुरुप्रदत्त शिक्षा का पालन करना चाहिए 122

4. सूरसुंदरी

सुरसुंदरी ने मिथ्या धर्म का सेवन कर जीवन भर कष्ट उठाये अतः हमें मिथ्यात्व का त्याग और सम्यक्त्व को धारण करना चाहिए 260

5. नागदत्त मुनि

क्रोध, मान, माया और लोभ ये चारों कषाय जहरीले सर्पों के समान है इसलिए इनसे बचना चाहिए तभी मोक्ष प्राप्ति हो सकेगी 94

6. विनयश्री

विनयश्री को संसार सबंधो की विचित्रता का भान होते ही संसार त्याग करदीक्षा ली और मोक्ष पद प्राप्त किया। अतः सांसारिक रिश्तों का मोह नहीं करना क्यों कि ये बदलते रहते है अशाश्वत है। 232

7. ब्रह्मदत्त

ब्रह्मदत्त पांचों इन्द्रियों के विषय-सुखों में आसक्त होकर नरकगति पाई। हमें सद्गति प्राप्त करने के लिए इन विषय सुखों में आसक्ति नहीं रखनी है। 80

8. पारासर

पाराशर ने कठोरता से गरीबों से कर वसूली, भोजन में अंतराय देकर अंतराय कर्म बांधे। हमें आपने हृदय में सरलता रखते हुए दया भाव रखना चाहिए 244

9. उदायी राजा

उदायी राजा ने प्रभु की सच्ची भक्ति कर तीर्थंकर नाम कर्म का बंध किया। हमें भी प्रभु का नाम जप, तप से भावपूर्वक करना चाहिए सच्ची भक्ति करनी चाहिए 199

10. रुक्मिणी साध्वी

यदि हमसे इस भव में किसी भी पाप का आचरण हो जाय तो उसकी आलोचना गुरु के समक्ष कर लेनी चाहिए नहीं तो रुक्मिणी साध्वी की तरह अनेको भवों तक संसार परिभ्रमण करना पड़ेगा। 126

प्र.6. निम्नोक्त अंको की जोडी किसका निर्देश करती है वह लिखिए। 20

26 पृष्ठ क्र.

उदा. 1 - 4 = 1 (एक) समय में 4 मतिश्रुतज्ञानी केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष में जाते है। 16

1. 3 - 49 तेइन्द्रिय (3) में उत्कृष्ट आयुष्य 49 दिन की है 149

2. 4 - 5 4 इन्द्रियों (स्पर्श, रस, घ्राण व श्रोतेन्द्रिय) के प्रत्येक के) 5 श्रुत निःसृत मतिज्ञान (व्यंजनावग्रह, अर्थावग्रह, ईहा, ~~अपाय~~ अवाय व धारणा) होते है। 8

3. 3 - 1 चक्षु, अचक्षु व अवधिदर्शनावरणीय ये 3 प्रकृतियां देशघाती है केवल 1 केवलदर्शनावरण सर्वघाती है। 33

4. 8 - 8 8 प्रकार के पच्चक्खाण से सभी आठ (8) कर्मों का विच्छेद होता है 3

5. 11 - 21 11 (ग्यारहवें) देवलोक का उत्कृष्ट आयुष्य 21 सागरोपम है 136

6. 2 - 26 मोहनीय कर्म में 2 (समकित मोहनीय व मिश्र मोहनीय की अध्रुव सत्ता है शेष 26 प्रकृतियो में ध्रुव सत्ता है। 85

7. 1 - 5 ज्ञानावरणीय कर्म की मूल प्रकृति 1 (एक) है और उत्तर प्रकृतियाँ 5 (पांच) है 7

8. 10 - 15 पुरुषवेद बंध की उत्कृष्ट स्थिति 10 कोटाकोटि सागरोपम तथा स्त्रीवेद की 15 कोटाकोटि सागरोपम है 112

9. 33 - 33 33 सागरोपम वाले देवताओं को 33 हजार वर्ष के बाद आहार की इच्छा होती है 66

10. 12 - 14 12 (बारहवें) अंग दृष्टिवाद में 14 (चौदह) पूर्व आ जाते है। 13

प्र.7. निम्नोक्त कर्म प्रकृतियाँ / उत्तर प्रकृतियाँ कौनसे गुणस्थानक तक रहती है, वह लिखिए। 15 [15]

□ 1 से 14 गुणस्थानक के क्रमानुसार कर्मों की तालिका बनाइए।

1. हास्य कर्म प्रकृति का उदय।
2. अप्रत्याखानीय कषाय का बंध।
3. आतप प्रकृति का बंध।
4. पराघात प्रकृति का उदय।
5. अशाता वेदनीय कर्म का बंध।
6. ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय।
7. थीणद्धि त्रिक का बंध।
8. देव आयु कर्म की सत्ता।
9. मिश्र मोहनीय कर्म का उदय।
10. साता वेदनीय कर्म का नाश।
11. एकेन्द्रिय नामकर्म की सत्ता।
12. नीच गोत्र कर्म का उदय।
13. अंतराय कर्म का बंध।
14. नरक आयु की सत्ता।

क्र.	कर्म	गुण-स्थानक	पृष्ठ क्र.
उदा.	मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का बंध	1	129
3	आतप प्रकृति का बंध	1	172
7	थीणद्धि त्रिक का बंध	2	48
9	मिश्र मोहनीय कर्म का उदय	3	129
2	अप्रत्याखानीय कषाय का बंध	4	95
12	नीच गोत्र कर्म का उदय	5	193
5	अशाता वेदनीय कर्म का बंध	6	58
14	नरक आयु की सत्ता	7	155
1	हास्य कर्म प्रकृति का उदय	8	108
11	एकेन्द्रिय नाम कर्म की सत्ता	9	177
13	अंतराय कर्म का बंध	10	282
8	देव आयु कर्म की सत्ता	11	133
6	ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय	12	5
4	पराघात प्रकृति का उदय	13	175
10	साता वेदनीय कर्म का नाश	14	58
उदा.	जिन नामकर्म का उदय	14	175

श्री

प्र.8. कारण दिजिए । 20

उदा. दान में अंतराय पैदा करने से आत्मविकास अवरुद्ध क्यों होता है ?

उत्तर धर्म की आद्य सीढ़ी दान है और जीवन में धर्म का प्रारंभ दान से ही होता है । 20 219

1. प्रभु भक्ति, मुक्ति की दूती क्यों है ? पृष्ट क्र.

प्रभु के प्रति अपने दिल में ज्यों-ज्यों भक्ति दृढ़ होती जाती है, त्यों त्यों अपनी आत्मा उन कर्मों के जटिल बंधनों से मुक्त बनती जाती है। प्रभु भक्ति मुक्ति की दूती है । 201

2. समृद्धि का भरोसा क्यों नहीं है ?

पूर्व के पुण्योदय से इस जीवन में यह भौतिक सुख-समृद्धि प्राप्त हुई है, इस समृद्धि का कोई भरोसा नहीं है। क्योंकि जबतक हमारा पुण्योदय है तबतक ही समृद्धि भी है। 20

3. राष्ट्रकूट बारी बारी से सातों नरकों में क्यों जाएगा ?

धनलोभ, अन्याय-अनीति, दुराचार = मद्य-मांस का सेवन, भोग-विलास में मग्नता के कारण गुरूकर्मी राष्ट्रकूट पापों की सजा के रूप में = बारी-बारी से सातों नरकों में जाएगा 77

4. गरीब का सुपात्र दान का पुण्य भी राई जितना क्यों हुआ ?

सुकृत के बाद पश्चाताप करने से मेरू जितना पुण्य भी राई के दाने जितना हो जाता है। मम्मणकी आत्मा-गरीब गृहस्थने भावपूर्वक सुपात्र-दान देकर जो पुण्य बांधा था, पछताकर उसे राई जितना बना दिया । 267

5. आत्मा यथायोग्य पुद्गलों को ग्रहण क्यों करती है ?

जीव के अध्यवसायों में जब राग-द्वेष का रस मिलता है तब आत्मा यथायोग्य पुद्गलों को ग्रहण करती है। 161

6. कषाय 'चोर' क्यों है ?

अप्रत्याख्यानीय क्रोध आदि चार कषाय, देशविरति धर्म की प्राप्ति में बाधक हैं। ये चार कषाय चित्त के शुभ भाव की चोरी करनेवाले चोर हैं, जो मोहराजा के घर में सदैव वास करते हैं। 95

7. हमें सुख दुःख की प्राप्ति क्यों होती है ?

पूर्वभव में जिसने जैसे कर्म उपार्जित किए होते हैं, उसे उन शुभ-अशुभ कर्मों के उदय के अनुसार सुख-दुःख की प्राप्ति होती है।" 25M

8. गुरु की आशातना करने से क्यों बचे ?

गुरु की घोर आशातनाके अति भयंकर कटुक परिणाम होते हैं। गोशालाके भवमें तारक वीरप्रभुकी जो घोर आशातनाकी परिणामतः असंख्य काल तक इस संसारमें भटकते हुए बहुत दुःख पाए। वर्णन करते गुरु भ. कहेंगे, भूलसे 7M भी गुरु आशातना कभी मत करना।

9. भक्तात्मा पापों की आलोचना क्यों करती है ?

मोक्ष के प्रति प्रीति जगने पर भक्तात्मा को भूतकाल में हुए पापों के प्रति पश्चाताप का भाव पैदा होता है और उन पापों की वह आत्मा आलोचना करती है। 229

10. प्रभु की भक्ति क्यों करे ?

परमात्मा मोहनीयकर्म के बंधनसे सर्वथा मुक्त बने हुए हैं, हम ज्यों-ज्यों उनकी भक्ति करते हैं, त्यों-त्यों हमारी आत्मा में रहे मोह के संस्कार दूर होते जाते हैं व उनके गुण हमारी आत्मा में उत्पन्न होते हैं। 227

प्र.9. उत्तर दीजिए । 14 [15]

1. कौन कौनसी भाषा का उपयोग कौन कौनसी महान आत्माओं ने अपनी देशना / रचना में किया है, वह पृष्ठ क्र. सहित लिखिए ।

उपयोग प्राकृत भाषा में = श्री महावीर प्रभु ने धर्म देशना दी। गणधर भगवंतों द्वारा देशना का संग्रह। संस्कृत भाषा में = सम्राट कुमारपाल, महामंत्री – वस्तुपाल, तेजपालजी ने काव्य रचनाएं की (पृ.111) | गुजराती भाषा में = महोपाध्याय यशोविजयजी काव्यरचना (IV) | पू. वीरविजयजीने अनेक पूजाओं की रचना की (V) | हिन्दी भाषा में = श्रीमद् विजय रत्नसेन सूरीश्वरजीने पूजाओं का भावानुवाद किया है (IV), २२८ ग्रंथ साहित्य रचना पूज्यश्रीने की (पृ. २८७-२९1)

2. ऐसी महान् आत्माएं जिन्हें उसी भव में / तीसरे भव में मोक्ष प्राप्त हुआ है, वह लिखिए । (पूर्ण किताब के आधार पर)

श्री

उत्तर उसी भव	पृ.क्र.	तीसरें भव	पृ.क्र.
श्री शिवराजर्षि	२२	श्री सुमंगल मुनि	72
श्री नागदत्त मुनि	90	श्री रत्नचूड़ जी	102
श्री आषाढ़ाभूति मुनि	122	राजा विनयंधर जी	२53
श्री शीलसन्नाहसूरि	126	श्री कनकमाला जी	२69
श्री ढंढण मुनिराज	२४7	श्री सुदर्शना जी	२69
श्री भीमसेन मुनि	२72	श्री हालिक किसानजी	२81
श्री राजकुमार अरिदमनजी	२75-76	श्री जयसूर जी राजा	२२४-२6
श्री चंद्रवती जी	२75-76	श्री शुभमति रानी	२२४-२6
श्री वीर प्रभु जी	83	श्री लीलावती जी	२32
श्रेष्ठिपुत्र श्री दृढ़प्रतिज्ञ जी	74	(नियाणिचारका जीव) मेंढ़क जी	148
श्री अमरतेज मुनि जी	२२6	प्रतिष्ठानपुर के सेठ का पुत्र जी	77

3. वीरप्रभु और मोहराजा की सेना में कौन कौन होते है ? पदसहित लिखिए ।

वीर प्रभु की सेना	मोहराजा की सेना
मंत्री – संतोष	मंत्री – लोभ
मंडलीक राजा – समकित	सैनिक – भयंकर क्रोध
सामंत – पांच महाव्रत	रथ – हास्यादि(रथ) पर मोहराजा
गजराज – मार्दव कोमलता	मांडलिक राजा – मिथ्यात्व
पैदल सैनिक – चरण सित्तरी, करण सित्तरी	स्त्री = माया
सेनापति – श्रुतबोध	पुत्र = काम
रथ – 18000 शीलांग (रथ) पर आरूढ वीर प्रभु	दो छोटे भाई – समकित मोहनीय, मिश्र मोहनीय

128 - 129

प्र.10. 'आठ कर्म विवारण पूजाएं' इस पुस्तक द्वारा कर्म का **10** मर्म आपको किस प्रकार समझ में आया, वह अपने शब्दो में लिखिए ।

पूर्व के भव में हमने (हमारी आत्माने) शुभ अशुभ जो भी कर्म किये है उनका उदय आने पर उन्हें भोगना ही पडता है। चारों कषाय हमारी आत्मा के गुणों की घात करते हैं सम्यक्त्व को हटाकर मिथ्यात्व में डालते हैं। तथा व्रत रहित मनुष्य चार गति रुप संसार में भटकता है। इसलिए कर्म का बंध करते समय हमें विचार करना चाहिए तथा जो पूर्व का बंध कर्म उदय में आया है तो उसका संताप नहीं करते हुए समभाव से सहन करना चाहिए क्योंकि संताप से शोक बढ़ता है। आठ प्रकार के पच्चक्खाण से आठों कर्मों का विच्छेद होता है। कर्मसूदन तप से ज्ञानावरणीय से अंतराय तक के आठों कर्मों का समूल नाश होता है। वीतराग प्रभु की भक्ति बुद्धता पूर्वक करने से उनके गुण हमें प्राप्त होते है तथा मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है।